

विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्

995-II

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ स्यात्तु कवि विष्णु माला ॥ कलश सगन वलि कुङ्कुम रुद्रा
कुङ्कुम दगुप्त मयुक्तं कवि कुसुमाया ॥ चतुर्क कुङ्कुम सुतुका रुसुत मी धृति धा
यन ॥ सिद्ध सुद धायन ॥ क्रम क्रम धायन ॥ धृति धायन धून दाव ॥ ० वा य
गुल्ल मदन सिद्ध तय मउ लथिल कवि सुजन ॥ यि नाय यूजा ॥ चंद्र वलि शाय
॥ समाधियाय ॥ अय वलि शाय वना ॥ क पस यूजा ॥ कुंर यूजा ॥ देव या क सान रु
कुल तय क ॥ शाय वना ॥ धूय नि नाउन विधि धंदे वयूजा भादानि रुयः

धृति धून दाव ॥ गुलि मावा दल्ल सु सु रुया व सुमि क सतय ॥ गुचु मनु लदक न
दचु धि यूजा ॥ क्रमा यन ॥ विसु जन ॥ सिद्धा धि वास न ॥ नी चाउन नावा
॥ मतर ॥ धृति धू दाव ॥ रुसु था य च यठ य ॥ गुलि न ॥ दोग ठा या व सया
या ॥ सि न रुया ॥ श्व वा थ स स याने या या ॥ सि धु रुया ॥ कुङ्कु च सुतु का न भाव
॥ दाहि दि ल सु क ठा रु सु क या या ॥ धृति धून दाव कुङ्कु रुद्रा धाय य धू न
दा व यूजा धून दा व ॥ सान न क ॥ सगु ल वि य ॥ वरु रुय ॥ दक ना यः

आ॥ कलशार्ति उक्त्वा॥ अति याद॥ कृष्ण लय जाञ्जय॥ दग्ध चिह्न सद्गुण॥ कृष्ण च
युजा या अर्ध स उमा यन विमर्जन॥ कथं शार्ति धुमूढ॥ मनु याता च न
द्रा या॥ सुपु या च क॥ कथं वञ्जय॥ धृति स या तकि ना वि धा न ॥ गुरु
ॐ न मा वृ धाय शाउन काया कि आ वि धि न क स था य ल या कृष्ण ल रु जा य क
ला स रु जा माल का कल स ग ग न ध लि य लि स द ल या ता धृ ति थं य धृ न द व
० चा य रु ल र्म नु ले द गृ ति कथं स रु व ना धू य या य नि ला उन धृ ति द व य अ

धू य नि ला उन स ना न या च क सी त सि धु उ अ म सा न न व द्र य य न्ना ग ना अ द
था वा नु रु ति आय अ र्ध मा अ का ला मू र्ध ध न मा वा च ध्व य टा चा म तं रु नि ला
उन था रु व या व सा ति क वा या व त य गुरु म द ल उ स न क क ग्व ल रु ति तं क
वि स र्जन या च क मा वा सा न रु राल न रु व क नि ना रु न द्वा य ता ल वा स त रु न ना
य क मा वा रु का कल शार्ति क वि य ध न व ला का च सा स का स ग म म ना ट गि यः
ति नि स ग य ध न रु ल या स ना दि ग ना या व द्ध व रु त य ध न अ ग न ध्व या त य सू यः

यातदं मलियाठका यकृद्वयकलयातं न कर्मतु ॐ आः समाधिरुल्लिखितयुतं
कृं स्यात्तल्लसं नलिक्काच ॐ कृं स्यात्तल्लसिच कृकचकृद्वयधनदिगतायावयति
लिलद्वुकायना ना आरुल्लनगिगसमतं सद्गलिचाकृकगयवाधिति सुमतयावः
मावानकायकगिगनतियकः मृतः ॐ आः सदीरुल्लनरुयल्लसालाः धर्ममृतं तिगनति
यकथनमदलधिचकृकाननगलकल्लगिगिद्वकवियदकनायकाकृकल्लयकाश
यधचल्लसना नायद्वनयोसतयावदिगतायावद्वल्लन ॐ आगनकाय ॐ
य

वात ॐ नमः समंतद्वधा नां आकावल्लददसाल्लरुका अविधनयाय मयनः
धननकः मृतः ॐ दिव्या नममा धानयि न नसालाः धर्ममृतं नकं नासिचकृक
कृद्वयल्लयनकाय ॐ नावियनसाकृकानमालानमालसायल्लययल्लन
कृकनाकागवियमावायनयल्लसुकायककिनककृमालिया आकृमवियसम
यकल्लगिगिधूमकर्म कृयातां काययानकाययिसदन धनकाकृकमावाया
मासका थाल्लसवा मृचिनकवयाकचयकालिभालकायकागका
वव

काव. वक्रिष्ठा यः धृति कनकाया कि आविधिः ॥ अतिमिष वि धन दय कया क
ससग्व १ क सया जाग्व १ सिउर्या पा २ क ल गम हाक कायल ॥ यव न द्रा ३ ३ य या
लषमा न ॥ अलय ता हा या कल स स गन ॥ अत्र कल स यव ग य द्या यमा द ग स म
यमाल येलि मनु या ना थ य धू दा व ॥ अत्र या क कि न क ॥ अत्र मू वा य जा रु आः
य क ग म नु ल धू दा व यव ग य द्या या सि धु न य म नु धिल रि स धि ॥ कल स स ग
न य जा द ग स म य न य धू न दा व स ल कल स स य ल का क रु य हा क कायल
न ता

वा क स रु य क स ल कल स स द व न मि उ र्या जा न य अति त य य जा या ग म
न न य धू न त य नि ना उ न अति स ना न य वा मि त य य ग दा न य जा न य अत य
ल व न य क द्र क न क न क ॥ अम द धि व चि न उ उ म सान द्या य क य जा धू दा व म
य धि न अ सि वा वि य द द नार्वा क नि स ना व वि य क अति सि क धू क द्र क द्र क द्र क
द्र क द्र क द्र क रु त सा म रु त सा द्र क द्र क नू द का य व ल द्र स ना या द व ल स त यः
अति का का या वि धन ॥ ३४

१ॐ नमो ब्रह्मयज्ञि मि द्वा दश गि र्थ स वा य क वि श्व नमो ह न नानि व न न व न न
नि व न न द्वा वा वा द्वा य वा ध ध न या य म मि वा न न ना य द्वा द न व न न वे र्वा थ व क
न य ग न न व न न वे र्वा डि स नि वा थ य व य मि डि स नि न व न न य १२ थ य ना या य क व न
न न न म नु ल या ना व नि थ य न या थ द ग नि य वि श्व ध न थ नि थ य न ध न द न ॥
७ वा य वा य वा रं न न न म नु ल सि ध न य क म नु न थि न क यि ना य य जा नं व व
वि श्व य स मा धि जा य व नि र्वा व ना कं न न न न य जा व न न वे र्वा य जा स्या न न न न

न रु व ना ध य स्या न नि वा न न यं वा न न द द य जा वि धि थं यि न सि ध रु रु म स्या न
ने व द्वा ध नि व १२ स न य य न्या न जा य न ध मी स्या न न न व न न वे र्वा थि न मा द्वा द न य द
यं न मा य न या थ स मा य य न मि श्र वि य म नु न वि श न न या व क स न न न द न ना
य जा क न न रि न के न मि वी दे व न न वे र्वा यि न न न द द श गि र्थ वा य क व न न य न
क न न वा १ वा को द न न वा १ द न न द्या न वा १ स न न मा ७ द्वा वा १ ना मा डि नि १ द न न वा १
दा ना न न द्वा वा १ न न न वा १ क दा न न द्वा वा १ न न न थि द्वा वा १ वि श्व ध न क द्वा वा १ द

मि	हि	श्र	श्र	रु	रु	उ	उ
मि	श्र	०	०	५	५	उ	उ
श्र	श्र	क				ग	घ
द	व					रु	रु
उ	रु					०	०
उ	रु	०				न	य
य	न	य	रु	व	रु	म	य
न	ल	व	०	व	म	रु	रु

२॥ रुसिद्धि ॥ सिका व वियलं शा ग्य धनलारु सुख वर सर्वः
 सिद्धि जयं र व ना न का रु विसा व द्वा ॥ १ ॥ द्विका व रु
 न सिध धर्म कामा य सिद्धि नं रु यर व गि क ल्या तं उदियी रुसि
 भ व व ॥ २ ॥ अका व वि रु यं सो द वां न रु र्यो य ध ना ग मा ल रु

३ ॥ अकारं माकसं नाय विगद कलदं रावन् गमनं या
 ४ ॥ उकारं यगुलारं के, विद्यासुजनमवच, लया न नाग
 ५ ॥ एकारं मागसं य, विष्टिरेव यदयद, अधहानिमनस्यं, का
 ६ ॥ ओकारं दसा न कार्ज, सर्वकामार्थसिद्धिदं, यगवृद्धिसंघं व, रुयक
 ७ ॥ उकारं दसं गयुजा, क्रमधेव स्यावदं, धनं वसु रावला, शांतिं मवरा विभक्ति
 ८ ॥ अकारं ऊदायुक्च, अग्निसुगरयराव, आजयंदः स्वकसुके, यीशरवि विधा राव
 ९ ॥ मृकारं सर्वजानि, सा राग्य विधी धानि, विगुलं रेव रागानि, अकुरयं वरा विधानि ॥ १० ॥ उकारं

कार्जुहानिष्ठ, संगायदृष्ट्यममदा, अथहानिमदाकसं, विथागबंधविगदं॥ ११ ॥ ७ कावे
यायविन्नर, सिंगानांचंचलंरयन्, विगदमिगबंधसा, नावदेवरनंऊथा॥ १२ ॥ ८ कावे
हागंलारः धनधान्यसखावदा, उयगिवगेकस्थानं, स्तनलारंगधवर॥ १३ ॥ ९ कावे
विद्या, सखानिविधिवानिच, धनधान्यद्वययाफि, रवगेनागंशय॥ १४ ॥ १० कावे
कंश, मृगुष्टेवनसंशय, विथागबंधहानिच, यगदाचरिविगदं॥ १५ ॥ ११ कावे
मृगुष्टेवनसंशय, गृहार्थेनमसिरुवे, अचिवादेवरविद्यमि॥ १६ ॥ १२ कावे
क्रियमवनसंशय, आवागकेसुखवेव, सायागविविधानिच॥ १७ ॥ १३ कावे

धनधा, एवसंयदा, सकाऊकेविकानीया, चरेआकाशमिनी॥ १८ ॥ १४ कावे
सर्वकार्यसमाहनं, करंष्टेवयवदृष्ट्यधनयगकलगुच॥ १९ ॥ १५ कावे
क्षम, गमनंयानसंदहा, मृगुष्टेवनसंशय॥ २० ॥ १६ कावे
गलारगवयाफि, सखसागायदृष्ट्य॥ २१ ॥ १७ कावे
थलारुके, सिनिगंसरुलंसव॥ २२ ॥ १८ कावे
यउतममनायक॥ २३ ॥ १९ कावे
वरुनागंशय॥ २४ ॥ २० कावे

वगिनिसा ॥ २५ ॥ अकारं दृष्ट्वा न कार्क, स्थितसिद्धरुविषयि, मित्रं के सविना धर्क, रावरा
 नाम सहाय ॥ २६ ॥ गकारं धनसंयायि, सा राग्यलरगयन, अविनयन कार्क के नगः सर्वक
 रुविषयि ॥ २७ ॥ ककारं विविधसाक, याधया कलदं म्, वरुना स अधदानि, कुक्षसर्व
 रुद्रुधम ॥ २८ ॥ टकारं गुरुसंयाय मित्रविना धविगुरु, यवयादुरुवमरु, अथवायानसं
 हाय ॥ २९ ॥ ठकारं वरुदानं के, विगदुधे वजायन, यधुधुधिसुरुविद्या, दृष्ट्वा न वसु साव
 दं ॥ ३० ॥ डकारं निवारं दियलं कारुखदं, अविद्युं स वकारं वलरुके धनसंयाय ॥ ३१ ॥
 ढकारं मित्रसिं गाव, मित्रं स रुसंगमं, स्वगदलरुगे सिद्धि, अग्निं वयुं के न स्याव ॥ ३२ ॥ णकारं

वनवलं विद्या, तथा रुं सूर्यमादस, यवमीरि, विना धंरु खउमासादु दृष्ट्वा न ॥ ३३ ॥ तकारं
 दीयदुं व, निधानं मित्रदसनं, सा राग्यलरुगे कार्क, सुनयायि, रुवीषयि ॥ ३४ ॥ थकारं य
 रयिगादि, सा दलरुगे विषयि, अथसागमनं व, रुवके नागसंहाय ॥ ३५ ॥ दकारं वरुसं
 यायि, क्रियुधं मवगुविषय, नष्टा धंरु वलरु, यसागुसुरुविषयि ॥ ३६ ॥ धकारं नि
 क्रिगासु, धनधानं सवधय, विंगयगु धकार्क, नगः सर्वरुविषयि ॥ ३७ ॥ नकारं धनका
 र्यव, सुखं रक वलसु, यवमायि अवागं, यधुधुधिसुरुविषयि ॥ ३८ ॥ यकारं धाव
 मासिद्धि, यरुयमानं रुयं सदा, यायकर्मन धानिक, नयं वक्रमरुविषयि ॥ ३९ ॥ रकारं वलरु

मनुष्याः श्रमो यो यद्वृत्तं यत्र कथं वदन्तः धनं याचि सर्वं वनसं सय ॥ ४० ॥ वकायं विविधमिह यत्र
 सितसमागमनं अत्र सा वमहासिद्धिः कस्य सर्वसद्वृत्तवत् ॥ ४१ ॥ रकायं श्रमो यद्वृत्तं यत्र कथं वदन्तः धनं याचि सर्वं वनसं सय
 मन्त्रादिकं रुतं दमा कथं दयाययुक्तयः ॥ ४२ ॥ मकायं धनं दानि नित्यं कृष्णं ये वदन्तः श्रमो यत्र कथं वदन्तः धनं याचि सर्वं वनसं सय
 यत्र कथं वदन्तः श्रमो यत्र कथं वदन्तः धनं याचि सर्वं वनसं सय ॥ ४३ ॥ यकायं वलं श्रमो यत्र कथं वदन्तः धनं याचि सर्वं वनसं सय
 वलं कथं वदन्तः श्रमो यत्र कथं वदन्तः धनं याचि सर्वं वनसं सय ॥ ४४ ॥ वकायं विविधमिह यत्र कथं वदन्तः धनं याचि सर्वं वनसं सय
 नमं वदन्तः श्रमो यत्र कथं वदन्तः धनं याचि सर्वं वनसं सय ॥ ४५ ॥ लकायं सा कसं गायः श्रमो यत्र कथं वदन्तः धनं याचि सर्वं वनसं सय
 यत्र कथं वदन्तः श्रमो यत्र कथं वदन्तः धनं याचि सर्वं वनसं सय ॥ ४६ ॥ वकायं महाविधिः यत्र कथं वदन्तः धनं याचि सर्वं वनसं सय

वायियुक्तयः ॥ ४७ ॥ मकायं मित्रमात्रिका निवर्तानि रविषागः नास्ति स्वविश्वमिह यत्र कथं वदन्तः धनं याचि सर्वं वनसं सय
 रविषागः ॥ ४८ ॥ यकायं सर्वे धारा वदन्तः धनं सर्वं संयदा वसन्तानि रुदियोगाः ॥ ४९ ॥ गिरिनामः
 सयः ॥ ५० ॥ सकायं धनसंयाचि यत्र कथं वदन्तः धनं संयदा श्रावकं संयदा श्रावकं वदन्तः धनं संयदा श्रावकं वदन्तः धनं संयदा श्रावकं वदन्तः
 ॥ ५१ ॥ वकायं दस्युः कथं वदन्तः धनं नाशय विचिन्ता यत्र कथं वदन्तः धनं नाशय विचिन्ता यत्र कथं वदन्तः धनं नाशय विचिन्ता यत्र कथं वदन्तः
 ॥ ५२ ॥ अकायं कथं वदन्तः धनं धनं न रविषागः संयदा वदन्तः सयः सयः निराविचिन्ता ॥ ५३ ॥
 ॥ ५४ ॥ सकायं धनं वदन्तः धनं नाशय विचिन्ता यत्र कथं वदन्तः धनं नाशय विचिन्ता यत्र कथं वदन्तः धनं नाशय विचिन्ता यत्र कथं वदन्तः
 ॥ ५५ ॥ वकायं धनं वदन्तः धनं नाशय विचिन्ता यत्र कथं वदन्तः धनं नाशय विचिन्ता यत्र कथं वदन्तः धनं नाशय विचिन्ता यत्र कथं वदन्तः

१ न क थालय कंठ सग न य वि म द या गा थ य न २ वा य गु म ड यं च ग त्र क्क य सिं धु र य द
 व रु ति य ज्ञा या य आ दि य ज्ञा आ दि स म य का य म ड थि ल स्नान गा हा मा धि या य म ह नि रु
 य कं ठा य ज्ञा वि धि थं या य धू न दा व अग्नि थ य न वि धि थं या य अग ना रु ति थ यिं यः
 ज्ञा द व य ज्ञा द डा ता रु ति ऊ धं वा अ का व मू ख धू न दा व अरु ति वि य सं ख दा धू दा व
 यं च कं रु य ज्ञा दि ग व वि म व व लि य ज्ञा धू न दा व यं च धा वा हा य यिं यं च न्ना हा या य धू दा व
 या बाल व ज्ञा य धू दा व मां सा रु ति वी य धू दा व यं ना रु दू य धू दा व सू या या त हा थ ग या

यं ना या य धू दा व

व ष्य या व ग या व दू य धू दा अ य ना रु ति दू य धू दा व य य धा वा हा व यिं सू या न थि य धू दा व
 यं च सा वि ल हि य धू दा व म ड थि य स्नान गा न आ ठि वि य चि त य ज्ञा कं ठा रि क क विः
 य द क ना य ज्ञा द गु स म य वि य म व या ल हि य स म य वि य धू दा व



पञ्चमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

निर्देशमदाहन्तुनिनाम

संज्ञा ७ चक्रा १ नम

३५२

१०५४

अ। न० द० य० न० । ज० ग० पु० । प० ना०

॥ १५ ॥

१०९५

१६ तृष्मा परिनाम

सो भाल देन बाण क क प पु रि नाम

पुष्पाक्षय ०८ वा नोपनिषद्

मकोदमया १० मकपाठिनाम

五

ॐ

三

हरि

भोगदेव

...
...
...
...
...
...

...
...
...
...
...
...

Handwritten text in a script, likely Indic, on the top page of a manuscript. The text is arranged in six lines. A small red mark is visible on the right side of the page.

Handwritten text in a script, likely Indic, on the bottom page of a manuscript. The text is arranged in six lines. A small red mark is visible on the right side of the page.

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 कृष्णार्जुनसंवादे अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदमुनि-
 शिष्यं त्वत्पुत्रं त्वया प्रियं ॥ वीर्यवान् धर्म-
 योद्धा स्वर्गाय त्वत्प्रसादात् ॥ १ ॥ ॥ श्रीकृष्ण
 उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 द्रुपद उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण
 उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण
 उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण
 उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण

Handwritten text in a cursive script, likely a historical document or manuscript. The text is written in a dark ink on aged, yellowed paper. The script is dense and appears to be a form of shorthand or a specific dialect. The text is arranged in a single column, with some lines showing signs of wear or damage.

Handwritten text in a cursive script, likely a historical document or manuscript. The text is written in a dark ink on aged, yellowed paper. The script is dense and appears to be a form of shorthand or a specific dialect. The text is arranged in a single column, with some lines showing signs of wear or damage. There are some red markings or ink bleed-through visible in the middle of the page.